नैणसी कृत मारवाड़ रा परगनां विगत में कृषि (परगना पोकरण के विषेश संदर्भ में)

डॉ. अनिल पुरोहित

राजस्थान की साहित्य परम्परा में 'विगत साहित्य' का विशेष महत्व है। विगत साहित्य में राजनीतिक, सामाजिक, क्षेत्रीय, आर्थिक, धार्मिक, स्थापत्यिक, प्रशासनिक इत्यादि आदि ऐतिहासिक जानकारियों का समावेश होता है। संबंधित राजवंश अथवा क्षेत्र की उपरोक्त जानकारियों का सूक्ष्मता से विवरण दिया गया होता है। यद्यपि विगत साहित्य असंख्य रूप में उपलब्ध है। इसमें उदावतों री विगत, रूपीयां आया उपड़िया री विगत, सरकारी खर्च ने केफायतां री विगत, राठौड़ों री खापां अर पट्टे रै गांवा री विगत, जोधपुर रे कमठा री विगत, मारवाड़ रा परगानां री विगत इत्यादि प्रमुख है। उदावतों री विगत में राव सूजा एवं उदा के वंशजों की जानकारी मिलती है। उनके पारिवारिक लोगों के जन्म-मृत्यु के संवत् इसमें उल्लेखित हैं। नरावतों री विगत में सूजा के पुत्र नरा के वंशजों एवं खींवसर के नरा राठौड़ों का विवरण है। जागीरों रै गांवों री रेख री विगत में सिसोदिया, शेखावत, भाटी चव्हाण एवं पंवार सरदारों के गांवों की रेख का विवरण मिलता हैं। इसी प्रकार विजैयशाही रूपयों की कितनी थैलियां जोधपुर राजकोष में आती थी, उसका विवरण रूपयां आयां उपड़ियां री विगत में मिलता है। मारवाड़ की खानों, रीति-रिवाजों आदि का विवरण सरकार खर्च ने केफायतां री विगत में मिलता है। राठौड़ सरदारों की खांपों में किस सरदार को कितनी रेख वाला गांव मिला हुआ था, इसकी जानकारी राठौड़ री खांपा अर पट्टे रे गांवां री विगत में मिलता है। मुहतां नैणसी कृत 'मारवाड़ री परगना री विगत' में 17वीं शताब्दी के मारवाड़ के परगनों का हाल दिया हुआ है, जिसमें एक प्रमुख परगना पोकरण भी था।

पोकरण की भौगोलिक स्थिति 26°25' अक्षांश एवं 71°55' रेखांश है। पोकरण पश्चिमी राजस्थान के इतिहास में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ की प्राचीन परम्परा के अनुसार, पोकरण को इस क्षेत्र की प्रमुख जाति पुष्करणा ब्राह्मणों के पूर्वज पुष्कर ऋषि[1] ने बसाया था। इस क्षेत्र में पंवारों का प्रभुत्व रहा था। उनका एक प्रारम्भिक शासक पुरूरवा यहाँ शासन किया करता था।[2] पोकरण से प्राप्त वि.स. 1070 (1013 ईस्वी) के एक लेख से ज्ञात होता है कि यहाँ परमारों (पंवारों) का

शासन हुआ करता था।[3] इसे 'कीर्ति स्तम्भ' के नाम से भी जाना जाता है। पंवार शासक पुरूरवा द्वारा निर्मित पोकरण का लक्ष्मीनारायण मंदिर भी ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध है।[4] पोकरण का परगना कालान्तर में जैसलमेर के भाटियों और फिर मारवाड़ के राठौड़ों के नियंत्रण में काफी समय तक रहा। राव मालदेव के काल में पोकरण मारवाड़ की पश्चिमी सीमा का महत्वपूर्ण प्रदेश बन चुका था। परवर्ती काल में पोकरण परगना मारवाड़ एवं मुगलों के आधिपत्य में रहा तथा यहाँ के ठाकुर अथवा प्रशासनिक अधिकारी निर्बाध रूप से राजस्व चुकाया करते थे। मारवाड़ का इतिहास लिखने वाले इतिहासकारों में मुहतां नैणसी का प्रमुख स्थान है। नैणसी द्वारा लिखित परगनां री विगत 17वीं शताब्दी के मारवाड़ के प्रमुख परगनों (जोधपुर, सोजत, जैतारण, फलौदी, मेड़ता, सिवाणा एवं पोकरण) के इतिहास के कई प्रमुख तत्त्वों पर प्रकाश डालती है।

पोकरण परगना मारवाड़ के पश्चिम में जोधपुर से 40 कोस दूर स्थित है।[5] नैणसी के अनुसार, यहाँ की बसावट में छत्तीस पवन जात समान रूप से निवास करती है।[6] यहाँ के कोट (दुर्ग) का विस्तृत निर्माण राव मालदेव ने करवाया था। मालदेव ने इसकी दीवार 15 गज ऊँची करवायी थी,[7] जिसे यहां के रावल कल्याणमल ने 08 गज अधिक ऊँचा करवाया था।[8] इस दीवार की चौड़ाई 5 गज थी।[9] राव मालदेव ने यहां जिस दुर्ग का निर्माण करवाया, उसके लिये, पोकरण के पास स्थित एक छोटे दुर्ग सातलमेर को ध्वस्त करके वहां की निर्माण सामग्री प्रयोग में ली गयी, जो जोधा के पुत्र सातल ने निर्मित करवाया गया था।[10]

मारवाड़ के अन्य क्षेत्रों की भांति पोकरण में राजस्व प्राप्ति का प्रमुख आधार यहां की कृषि ही थी, किंतु पोकरण का क्षेत्र पश्चिमी राजस्थान में अविस्थत था, अत: यहां पूर्वी अथवा दक्षिणी-पूर्वी मारवाड़ की भाँति कृषि के लिये लूणी नदी का सहयोग नहीं था। लूणी नदी अजमेर के दक्षिण-पश्चिमी से प्रारम्भ होकर 200 मील के वृहत् बहाव क्षेत्र के पश्चात् कच्छ के रण में गिरती थी। अपने बहाव क्षेत्र में यह मारवाड़ के दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्रों को उपजाऊ करती थी। सिंचाई की किसी भी नियमित प्रणाली के अभाव में और वर्षा की अनियमितता यहां की की कृषि को अत्यधिक प्रभावित करती रही है तथा इसी कारण यहां बरसाती फसलें अथवा न्यून जल आवश्यकता वाली फसलें उपतजी रही हैं।

नैणसी के विवरणानुसार पोकरण के प्रत्येक ग्राम में कुँओं की प्राप्यता थी तथा सामान्य रूप से इन कुँओं में दस हाथ गहरे ही जल की उपलब्धता हो जाती है[11] और यह जल मीठा होने के कारण से कृषि योग्य था। विगत का अध्ययन करने पर यह भी ज्ञात होता है कि, पोकरण परगने के कई गाँव सामान्यत: वीरान थे। मात्र बारिश होने पर यहां के क्षेत्रवासी यहां कृषि करने आया करते थे। ऐसे गाँवों में रातड़ियों,[12]

झाबरों,[13] खालतसर,[14] रोहियो,[15] दूधियौ[16] इत्यादि प्रमुख है। पोकरण के परगने में फसलें दोनों प्रकार की (रबी एवं खरीफ) होती थी, किंतु सियालू अथवा खरीफ की कृषि ज्यादा की जाती थी, क्योंकि इसके लिए अधिक जल की आवश्यकता नहीं होती थी।

आलोच्य परगने में कृषि उपयोग में जो भूमि प्रयुक्त होती है, वह शुष्क कटिबन्धीय क्षेत्रों के अनुरूप होने के कारण इसका अधिकतर भाग परती भूमि है,[17] जहाँ अत्यधिक रेत के कारण घास समान फसलों के अतिरिक्त कुछ भी अन्य मुश्किल से ही उपजता है, किंतु फिर भी कुल भूमि के 55 से 60 प्रतिशत भाग पर कृषि की जाती थी।

परगने पोकरण की प्रमुख फसलों में गेहूँ, बाजरा, ज्वार, जौ, मोठ, मूंग, तिलहन आदि थी। इनके अतिरिक्त कुछ सब्जियों का भी उत्पादन होता था, किंतु इनमें वे ही सब्जियां प्रमुख थी, जो न्यून वर्षा होने के पश्चात् भी अपने-आप उग जाती थी। ऐसा प्रतीत होता है कि पोकरण परगने के अनेक ग्रामों में उत्पन्न होने वाली ये सब्जियां मात्र स्थानीय माँग को भी मुश्किल से पूर्व कर पाती होगी। पोकरण कस्बे में ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, तिल, कपास जैसी फसलें अच्छी मात्रा में होती थी।[18]

गेहूं एक रबी की फसल है तथा पोकरण परगने में इसका सामान्य उत्पादन हुआ करता था। मारवाड़ क्षेत्र का गेहूं दो प्रकार का हुआ करता था - सेंवज तथा पीवज। पीवज प्रकार का गेहूं खारे एवं मीठे दोनों प्रकार के जल द्वारा विकसित किया जाता थाय इन्हें क्रमशः खारचिया एवं मीठवानिया से जाना जाता है।[19] यद्यपि पोकरण क्षेत्र से गेहूं की फसल ली जाती थी, किंतु यह एक खर्चीली एवं अधिक श्रमयुक्त फसल थी। इस क्षेत्र के कृशक कुँओं द्वारा सिंचित (अरहट द्वारा) भूमि पर गेहूं की कृषि किया करते थे।[20] पोकरण में गेंहू प्रमुख रुप से भींवा,[21] सौहवो (लोहवा)[22], धुहडसर,[23] साकडों,[24] भुणीयाणों,[25] दाँतल,[26] बाढणियों,[27] भाखरी,[28] म्हैडूजीवण[29] रौ वास, ऊँजला,[30] कावां[31] आदि गाँवों में उत्पादित होता था।

बाजरा की कृषि के बारे में इस क्षेत्र से अधिक जानकारी नहीं मिलती, किंतु चारे के रूप में इसका सामान्य उत्पादन होता होगा। बाजरा की कृषि पोकरण में खारौवास,[32] भुणीयाणों,[33] भाखरी,[34] बाढणियों,[35] म्हैडूजीवण रौ वास,[36] वास झालरियां रा,[37] सौहवो[38] आदि गाँवों में रुप से उत्पादित की जाती थी। नैणसी के अनुसार, ज्वार एवं रबी की फसल के रूप में जौ का उत्पादन सम्पूर्ण मारवाड़ से होता था, किंतु यह यहाँ की कम प्रचलित फसलें थी।[39] पोकरण क्षेत्र में खरीफ फसलों में दालें मुख्य रूप से उत्पादित होती थी। इसमें मूठ और मूंग प्रमुख थी। विगत के अनुसार, पोकरण क्षेत्र से मोठ का उत्पादन 55 प्रतिशत तक होता था। मोठ की भाँति ही मूंग भी पोकरण क्षेत्र

की प्रमुख फसल थी। पोकरण क्षेत्र में तिलहन का उत्पादन भी होता था। तिल की फसल में भी यहाँ के लगभग 55 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि का प्रयोग होता था।[40] यह खरीफ की फसल अत्यधिक होने पर भी यहाँ की मात्र स्थानीय माँग की पूर्ति करती थी, क्योंकि यहां की व्यापारिक गतिविधियों में मात्र स्थानीय बाजारों या मंडियों में ही यह विक्रय होती थी।

यद्यपि पोकरण परगना अपनी भौगोलिक विषमताओं के कारण से अत्यधिक फसलों का उत्पादन नहीं कर पाता था, किंतु जितना भी उत्पादन होता था, वह यहां की स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति अवश्य कर देता होगा। भौगोलिक विषमताओं के कारण से यहां के कृषि में कृत्रिम सिंचाई साधनों का भी काफी विकास हुआ प्रतीत होता है।

पोकरण में सिंचाई के स्रोतों में नदियों की अनुपलब्धता को कुएं, बावड़ियां एवं नाले पूर्ण करते थे। विगत के अध्ययन से से यह ज्ञात होता है कि, पोकरण में कुँओं की संख्या लगभग सौ से भी अधिक है[41] और अधिकांश कुँओं का पानी मीठा था, अत: यहां से मीठवानिया गेहूं अधिक उत्पादित होता होगा। इसी प्रकार यहां तालाबों की संख्या लगभग साठ के करीब है, जिनमें चार से आठ महीनों तक पानी रहता था।[42] परगने के पोकरण कस्बे में जल स्रोतों के रुप में कुल 23 बावडियां और एक नदी (बरसाती) है।[43] इस नबी क॓जल के रासण यहाँ की बावडियों में जल की उपलब्धता लगभग पूरे वर्ष ही रहती हैं। परगने के गाँवों मे तालाब, कुएं, बावडियां, छोटे कुएं (बेरियां) इत्यादि प्रकार के जल स्रोत प्राप्त होते हैं।[44] विगत के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि, यहाँ के गाँवों में खारौवास (एक तालाब और एक कुंआ खारे पानी का),[45] बांभणू (दो तालाब),[46] मुढलों सोहडा (एक तालाब और एक कुंआ),[47] चांदसमो (दो कुएं मीठे पानी के),[48] छयण (छ: कुएं मीठे पानी के),[49] राहडा रौ वास (एक तालाब),[50] थाट (एक तालाब और दस बेरे मीठे पानी के),[51] राहियो (आठ कुएं),[52] साकडौ (चार तालाब और सात कुएं),[53] बाधेवौ (तीन कुएं मीठे पानी का),[54] गुडी (दो कुएं मीठे पानी के),[55] आवणेसो (तीन तालाब और एक कुंआ)[56] आदि में जल स्रोत पर्याप्त मात्रा में है। इनके अतिरिक्त ऐसे अनेक गाँव है, जिनमें जल-स्रोत अत्यधिक कम मात्रा में प्राप्त होते हैं। ऐसे गाँव जहाँ नजदीक के गाँवों के जल-स्रोतों से मंगवाया जाता था, जैसे -''जैसिंघ रो गाँव (रामदेवरा से जल मंगवाते थे),[57] खेत पालीयां री सरेह,[58] गालरा री सरेह, [59] वास झालरिया,[60] नणदौई रौ वास[61] इत्यादि। पोकरण परगने में जहाँ-जहाँ मीठे पानी के जल-स्रोत हैं उनका प्रयोग पीने के लिये किया जाता है एवं इनमें से कई जल-स्रोत अकाल के समय प्रयोग लेने हेतु आरक्षित होते थे, जैसे बाधेवो गाँव के तीन कुओं का प्रयोग अकाल के समय ही किया

जाता था।[62] पोकरण क्षेत्र में तालाबों और कुँओं के अतिरिक्त अनेक क्षेत्र ऐसे भी थे, जहाँ वर्षा के साथ जो पानी बहकर आता था, जिससे स्थानीय जंगली फसलें उत्पन्न हो जाती थी। इसके अतिरिक्त पोकरण में वर्षा होने के पश्चात् जल नालों के रूप में प्रवाहित होता है, कई स्थानों का स्तर आस-पास के क्षेत्रों से थोड़ा निम्न होता है, अत: आस-पास के क्षेत्रों का जल प्राकृतिक जलस्रावों के माध्यम से उस निचले स्थान पर एकत्रित होता होगा। इस प्रकार के संचित हुए जल स्थान को स्थानीय भाशा में 'खड़ीन' कहा जाता है।[63] प्रारम्भिक खड़ीनों का निर्माण विशेष रूप से यहां की ब्राह्मण जाति के सहयोग से हुआ है, जिनमें पल्लीवाल ब्राह्मण भी थे।[64]

इस प्रकार विगत से यह ज्ञात होता है कि, यद्यपि पोकरण पश्चिमी मारवाड़ में अवस्थित था, जहाँ कृषि के लिए अनुकूल परिस्थितियां बिल्कुल भी नहीं प्रतीत होती, किंतु यहां के प्राकृतिक जलस्रोतों एवं उपलब्ध वर्षा की मात्रा से यहां पर भी कृषि स्थानीय मांगों के अनुसार सामान्य रूप से विकसित रही थी। यद्यपि नैणसी का विवरण परगने के समस्त गाँवों की स्थिति को नहीं दर्शाता है, किंतु मोटे तौर पर विगत एक प्रामाणिक स्रोत है, इस क्षेत्र के इतिहास को रेखांकित एवं पुनर्लेखित करने के लिए।

सन्दर्भ

1. मुहता नैणसी, मारवाड रा परगना री विगत, भाग-2, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1969, पृ. 289
2. वही, पृ. 290
3. राजस्थान जिला गजेटियर, जैसलमेर, संपादक-के.के. सहगल, निदेशालय, जयपुर, पृ. 332
4. वही.
5. नैणसी, पूर्वोक्त, पृ 320
6. वही, पृ. 310
7. वही, पृ. 309
8. वही.
9. वही.
10. राजस्थान जिला गजेटियर, जैसलमेर, पृ. 332
11. नैणसी, पूर्वोक्त, पृ. 289
12. वही, पृ. 319
13. वही.
14. वही.
15. वही, पृ. 318
16. वही.
17. राजस्थान जिला गजेटियर, जैसलमेर, पृ. 83

18. नैणसी, पूर्वोक्त, पृ. 316
19. अर्सकाइन,द गजेटियर ऑफ वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स,पॉपूलर प्रकाशन, पृ.बी-103
20. नैणसी, पूर्वोक्त, पृ. 312-315
21. वही, पृ. 329
22. वही, पृ. 330
23. वही,पृ. 331; यहाँ खडीनों के द्वारा कृषि होती थी।
24. नैणसी, पूर्वोक्त, पृ. 340; यहाँ मीठे पानी से गेहूँ की कृषि राजपूत करते थे।
25. नैणसी, पूर्वोक्त, पृ. 345; यहाँ के पाँच तालाबों में जल उतरने पर कृषि होती थी, जिसमें गेहूँ की फसल 400 मन की होती थी।
26. नैणसी, पूर्वोक्त, पृ. 346
27. वही, पृ. 351
28. वही, पृ. 350; यहाँ एक तालाब था एवं चारणों ने कृशि हेतु एक कुंआ खुदवाया था।
29. नैणसी, पूर्वोक्त, पृ. 352
30. वही,पृ. 354; यहाँ वर्षा के बाद गेहूँ की कृषि (सेंवज) की जाती थी।
31. नैणसी, पूर्वोक्त, पृ. 329
32. वही
33. वही, पृ. 345
34. वही, पृ. 350
35. वही, पृ. 351
36. वही, पृ. 352
37. वही
38. वही, पृ. 329
39. वही, पृ. 327-354; ज्वार एवं जौ की कृषि मुख्यतया भूमियाणों, रामदेवरा, खेजड़ली बड़ी, सोहवो (लोहवा), भाखरी, बाढणियों, मांडवों वास, रतनू रुपसी रौ वास, उजळा इत्यादि गाँवों में होती थी।
40. नैणसी, पूर्वोक्त, पृ. 327-352; तिलहन, मूंग और मोठ मुख्य रुप से जाटियावास, पेसावास, संझाडों, सथलाणों, चवाबडा, खेजड़ली खुर्द, डोहली, रामदेवरा, भूणीयाणों सैहवो, चैनपुरा, गुजरावास, मेहावसणी, बीरडावास, सांगावसणी, खेजड़ली बड़ी इत्यादि क्षेत्रों में उत्पादित होते थे।
41. नैणसी, पूर्वोक्त, पृ. 327-352
42. वही
43. वही, पृ. 312-315
44. वही, पृ. 312-316
45. वही, पृ. 333
46. वही, पृ. 334

47. वही
48. वही, पृ. 335
49. वही.
50. वही, पृ. 336
51. वही.
52. वही, पृ. 338
53. वही, पृ. 340
54. वही, पृ. 342
55. वही, पृ. 344
56. वही, पृ. 345
57. वही, पृ. 336; गाँवों के दक्षिण में बनी खडीनों में चार माह पानी रहता था।
58. वही, पृ. 339
59. वही, पृ. 340; यहाँ वर्षा होने पर खेत पानी से भर जाते थे, उसी भूमि पर कृषक खेती किया करते थे।
60. वही, पृ. 352
61. वही, पृ. 355; यहाँ की पानी की नाडियों में चार मास पानी रहता था, फिर आवश्यकता होने पर नजदीक के गाँवों से मंगवाया भी जाता था। इसके अतिरिक्त यहाँ प्राकृतिक रुप से निर्मित खडीनों का जल भी प्रयोग में लिया जाता था।
62. वही, पृ. 342
63. राजस्थान जिला गजेटियर, जैसलमेर, पृ. 86
64. वही

27. सिद्ध संत जसनाथजी 1482 ई.–1506 ई.
—डॉ. संतोष जैन एवं डॉ. तारा जैन ... 214

28. सिद्ध जसनाथ जी और जसनाथी–सम्प्रदाय
का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
—प्रो. शिव कुमार भनोत ... 218

29. पारम्परिक चिकित्सा विधियों में वीर कल्लाजी
(शिव शक्ति धाम, खेरवा गद्दी) का महत्व
—आसिफ हुसैन ... 224

30. मध्यकालीन ऐतिहासिक स्थल मोगेराई
—डॉ. भंवरसिंह भाटी ... 228

31. उमरकोट–जोधपुर सम्बन्ध
—पंकज चाण्डक ... 233

32. बीकानेर राज्य के केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध, कल्याणमल–
अकबर सम्बन्धों के विशेष संदर्भ में : एक पुनरावलोकन
—सुश्री कनिका भनोत ... 239

33. मध्यकालीन राजपूताने की ग्रामीण अर्थव्यवस्था
—डॉ. सुरेश कुमार चौधरी ... 249

34. मध्यकाल में महाराष्ट्र के औरंगाबाद क्षेत्र में
बीकानेर के राजवंश की स्मृतियां
—डॉ. नरसिंह परदेसी बघेल ... 253

35. नैणसी कृत मारवाड़ रा परगनां विगत में कृषि
(परगना पोकरण के विषेश संदर्भ में)
—डॉ. अनिल पुरोहित ... 260

36. 17वीं शताब्दी में मेवाड़ का साहित्यिक विकास
—डॉ. श्रीमती उषा पुरोहित ... 267

37. ठिकाना (ग्राम) थाणा (अलवर राज्य के साथ सम्बन्ध)
—डॉ. अंशुल शर्मा एवं दीपक चौधरी ... 271

38. शहर पनाह : उदयपुर के पोल
—प्रो. मीना गौड़ ... 276

39. राजस्थान में मंदिर स्थापत्य : ओसियां व आबू के विशेष संदर्भ में
—ममता यादव ... 281

ISSN 2321-1288

RAJASTHAN HISTORY CONGRESS

RAJHISCO

PROCEEDING VOLUME XXIX

MAHILA P.G. MAHAVIDYALAYA,
JODHPUR

NOVEMBER - 2014